SHORTHAND ONLINE
Online Stenography Platform

अध्यक्ष महोदय, उत्तम स्वास्थ्य का आनंद पाने के लिए, परिवार में खुशी लाने के लिए और सबको शांति प्रदान करने/ के लिए सबसे पहले अनुशासित बनने और अपने मस्तिष्क पर नियंत्रण प्राप्त करने की आवश्यकता है। भगवान बुद्ध द्वारा संपूर्ण// जगत को दिए गए इस संदेश में अनुशासन को महिमामंडित किया गया है। अनुशासन शब्द शासन में अनु उपसर्ग के/// जुड़ने से बना है। इस तरह अनुशासन का शाब्दिक अर्थ है- शासन के पीछे चलना। प्राय: माता पिता एवं गुरुजनों/1 के आदेशानुसार चलना ही अनुशासन कहलाता है। किंतु यह अनुशासन के अर्थ को सीमित करने जैसा है। व्यापक रूप से/ देखा जाए तो स्वशासन अर्थात् आवश्यतानुसार स्वयं को नियंत्रण में रखना भी अनुशासन ही है। अनुशासन के व्यापक अर्थ में// शासकीय कानून के पालन से लेकर सामाजिक मान्यताओं का सम्मान करना ही नहीं, बल्कि स्वस्थ रहने के लिए शारीरिक नियमों/// का पालन करना भी सम्मिलित हैं।

इस तरह सामान्य एवं व्यावहारिक रूप में व्यक्ति जहां रहता है, वहां के नियम/2 कानून एवं सामाजिक मान्यताओं के अनुरूप आचरण एवं व्यवहार करना ही अनुशासन कहलाता है। माइकल जे. फोक्स ने इसे परिभाषित करते हुए,/ कहा है इस बात पर ध्यान दिए बिना कि कोई हमें देख रहा है अथवा नहीं, किसी कार्य को सही ढ़ंग// से करना ही अनुशासन है।

जैसा कि प्रारंभ में बताया गया है अनुशासन का अर्थ होता है- शासन के पीछे/// चलना। इसका अर्थ देखा जाए तो जैसा शासन होगा, वैसा ही अनुशासन होगा। इस प्रकार यदि कहीं अनुशासनहीनता व्याप्त है/3 तो कहीं न कहीं इसमें अच्छे शासन का आभाव भी जिम्मेदार होता है। यदि परिवार के मुखिया का शासन सही/ नहीं है तो परिवार में अव्यवस्था व्याप्त रहेगी ही। यदि किसी स्थान का प्रशासन सही नहीं है तो वहां अपराध// का ग्राफ स्वाभाविक रूप से ऊपर ही रहेगा। यदि राजनेता कानून का पालन नहीं करेंगे तो जनता से इसके पालन/// की उम्मीद नहीं की जा सकती।

यदि खेल के मैदान में कैप्टन स्वयं अनुशासित नहीं रहेगा तो टीम के/4 अन्य सदस्यों से अनुशासन की आशा करना व्यर्थ है और यदि टीम अनुशासित नहीं है तो उसकी पराजय से उसे/ कोई नहीं बचा सकता। इसी तरह यदि देश की सीमा पर तैनात सैनिकों का कैप्टन ही अनुशासित न हो तो// उसकी सैन्य टुकड़ी कभी अनुशासित नहीं रह सकती। परिणामस्वरूप देश की सुरक्षा निश्चित रूप से खतरे में पड़ जाएगी। राष्ट्रपिता/// महात्मा गांधी के शब्दों में अनुशासन के बिना न तो परिवार चल सकता है और न संस्था या राष्ट्र ही। सचमुच/5 यदि परिवार के सदस्य अनुशासित न हो तो उस परिवार का अव्यवस्थित होना स्वाभाविक है। सरकारी कार्यालयों में यदि कर्मचारीगण/ अनुशासित न हों तो वहां भ्रष्टाचार का बोलबाला हो जाता है। अनुशासन के आभाव में किसी भी समाज में अराजकता// व्याप्त हो जाती है। अत: अनुशासन किसी भी सभ्य समाज की मूलभूत आवश्यकता है। अनुशासन न केवल व्यक्तिगत हित, बल्कि/// सामाजिक हित के दृष्टिकोण से भी अनिवार्य है।

एक बच्चे का जीवन उसके परिवार से प्रारंभ होता है। यदि परिवार/6 के सदस्य गलत आचरण करते हैं तो बच्चा भी उनका अनुसरण करेगा। परिवार के बाद बच्चा अपने समाज एवं स्कूल/ से सीखता है। यदि उसके साथियों का आचरण खराब होगा तो उससे उसके भी प्रभावित होने की पूरी संभावना बनी// रहेगी। यदि शिक्षक का आचरण गलत है तो भला बच्चे कैसे सही हो सकते हैं? इसलिए आवश्यक है कि हम/// अपने आचरण में सुधार लाकर स्वयं अनुशासित रहते हुए ही बाल्यकाल से ही बच्चों में अनुशासित रहने की आदत डाले। वही/7 व्यक्ति अपने जीवन में अनुशासित रहने। वहां जिसे बाल्यकाल में ही अनुशासन की शिक्षा दी गई हो। बाल्यकाल में जिन/ बच्चों पर उनके माता पिता लाड प्यार के कारण नियंत्रण नहीं रख पाते, वही बच्चे आगे चलकर गलत रास्ते पर// चल पड़ते हैं एवं अपने जीवन में कभी सफल नहीं होते। अनुशासन के आभाव में कई

प्रकार की बुराईयां समाज/// में अपनी जड़े जमा लेती हैं। नित्य प्रति होने वाले छात्रों के विरोध प्रदर्शन, परीक्षा में नकल, शिक्षकों से बदस्लूकी/8 अनुशासनहीनता के ही उदाहरण हैं। इसका दुष्परिणाम उन्हें बाद में जीवन की असफलताओं के रूप में भुगतनी पड़ती है। किंतु/ जब तक वे समझते हैं, तब तक देर हो चुकी होती है।

विद्या अर्जित करने के लिए विद्यार्थियों को अपने// शिक्षकों के निर्देशों का अनुसरण करना पड़ता है। यदि कोई संगीत में निपुण होना चाहता है तो उसे नियमित रूप/// से इसका अभ्यास करना ही पड़ेगा। खिलाड़ी बनने के लिए व्यक्ति को नियमित रूप से शारीरिक व्यायाम करने के साथ साथ/9 अपने आहार व्यावहार का भी ध्यान रखना पड़ता है। यदि मनुष्य अपने खान पान का ध्यान न रखे तो उसका/ शरीर भी उसका साथ नहीं देता और अनेक प्रकार की बीमारियों के कारण उसे कई प्रकार के कष्टों को भोगना// पड़ता है।

किसी मनुष्य की व्यक्तिगत सफलता में भी उसके अनुशासित जीवन की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। जो छात्र अपना/// प्रत्येक कार्य नियम एवं अनुशासन का पालन करते हुए संपन्न करते हैं वे अपने अन्य साथियों से न केवल श्रेष्ठ/10 माने जाते हैं, बल्कि सभी के प्रिय भी बन जाते हैं।

SHORTHAND ONLINE
Online Stenography Platform